Aethel Research Digest Juncture: An International Journal
E-ISSN: 3139-1672
Vol. 1, Issue 1, November- December 2025
Received: 28/11/2025 Revised: 09/12/2025
Accepted: 13/12/2025 Published:15/12/2025

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ. तोंडाकुर एल.पी
हिंदी विभाग, महिला कला महाविद्यालय, बीड (महाराष्ट्र)
मो. नं. ९४२१५५२८९१, ईमेल- tondakurlaxman@gmail.com

संक्षेप (Abstract)

यह शोधप्रपत्र आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टि का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है तथा यह स्पष्ट करता है कि आधुनिक हिंदी काव्यालोचना के विकास में उनकी विचार-पद्धति किस प्रकार प्रेरक, प्रभावकारी और बहुस्तरीय भूमिका निभाती है। केदारनाथ सिंह द्वारा लिखित निबंध 'आचार्य शुक्ल की काव्य-दृष्टि और आधुनिक कविता' को आधार बनाकर इस अध्ययन में शुक्ल की आधुनिकता-विचारधारा, सामंजस्य-सिद्धांत, भाषा-बोध, रीतिकाल-विवेचना और आधुनिक कविता के प्रति उनकी प्रतिक्रियाओं की पुनर्पाठ की गयी है।

शोध से यह उभरकर सामने आता है कि शुक्ल 'आधुनिकता' को मात्र समयबद्ध परिवर्तन न मानकर एक मूल्यपरक सह-अनुभूति के रूप में देखते हैं, जो साहित्य को बदलती हुई सामाजिक-मानसिक संरचनाओं के साथ जोड़ती है। उनका सामंजस्य-सिद्धांत काव्य-निर्णय का महत्वपूर्ण निकष अवश्य है, परंतु आधुनिक कविता की बहुविध प्रवृत्तियों—विशेषतः मुक्तछंद, अतुकांत और नवभाषाई प्रयोगों—के संदर्भ में यह सिद्धांत सीमित प्रतीत होता है। भाषा-संबंधी विचारों में शुक्ल की वरीयताएँ, विशेषकर अवधी-ब्रज के प्रति उनका आग्रह और खड़ीबोली की प्रयोगशीलता पर उनकी शंकाएँ, उनके भाषिक पूर्वग्रह को उजागर करती हैं। फिर भी, उनकी आलोचना की ऐतिहासिकता, सांस्कृतिक संदर्भों की पहचान और साहित्य के सामाजिक सरोकारों पर उनका जोर हिंदी आलोचना को बौद्धिक आधार प्रदान करता है।

E-ISSN: 3139-1672

अध्ययन निष्कर्ष निकालता है कि शुक्ल की काव्य-दृष्टि में निहित अंतर्विरोध उस समय के संक्रमणशील साहित्यिक और सामाजिक परिदृश्य को प्रतिबिंबित करते हैं। केदारनाथ सिंह के माध्यम से किए गए पुनर्मूल्यांकन से यह स्पष्ट होता है कि शुक्ल की सीमाएँ होते हुए भी उनकी दृष्टि हिंदी साहित्य के सौंदर्यबोध, इतिहास-दृष्टि और आलोचना-परंपरा के विकास में अत्यंत महत्वपूर्ण और आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।

बीज शब्दः *रामचंद्र शुक्ल, काव्य-दृष्टि, आधुनिक कविता, अंतर्विरोधों, प्रासंगिकता, तुलसी, लोकमंगल इ.*

भूमिका

आचार्य रामचंद्र शुक्ल हिंदी आलोचना के प्रथम वैज्ञानिक तथा आधुनिक रूपाकार माने जाते हैं। उनकी काव्य-दृष्टि पर समय-समय पर विभिन्न विद्वानों ने विचार किया है। विशेषतः केदारनाथ सिंह ने अपने प्रसिद्ध लेख *'आचार्य शुक्ल की काव्य-दृष्टि और आधुनिक कविता'* में उनकी काव्य-दृष्टि की प्रासंगिकता, उपादेयता, अंतर्विरोध और शक्ति का विश्लेषण किया है। शुक्लजी का काव्य-चिंतन जितना प्राचीन और मध्यकालीन साहित्य के संदर्भ में प्रखर है, उतना आधुनिक कविता के संदर्भ में नहीं। फिर भी उन्होंने आधुनिक सौंदर्यशास्त्र और आलोचना की नींव रखी। प्रस्तुत शोध-पत्र में आचार्य शुक्ल की काव्य-दृष्टि का विस्तृत अध्ययन किया गया है।

अनुसंधान का उद्देश्य

1. आचार्य शुक्ल की काव्य-दृष्टि के मूल तत्त्वों का अध्ययन करना।
2. केदारनाथ सिंह द्वारा प्रस्तुत शुक्ल-दृष्टि के विश्लेषण का समीक्षात्मक परीक्षण करना।
3. शुक्लजी के अंतर्विरोधों, द्वंद्वों और सौंदर्य-बोध की प्रकृति को समझना।

4. आधुनिक हिंदी कविता के संदर्भ में शुक्लजी की काव्य-दृष्टि की उपयोगिता व सीमाओं को रेखांकित करना।

5. शुक्ल और केदारनाथ सिंह के बीच आलोचना-संवाद की पहचान करना।

शोध-पद्धति

इस शोध-पत्र में गुणात्मक (Qualitative) शोध-पद्धति अपनाई गई है, जिसमें—

- सामग्री-विश्लेषण पद्धति (Content Analysis)
- तुलनात्मक पद्धति (Comparative Method)
- व्याख्यात्मक पद्धति (Interpretative Method) का उपयोग किया गया है।

प्रमुख स्रोत रूप में आचार्य शुक्ल के निबंध, उनकी आलोचना-पद्धति, तथा केदारनाथ सिंह के आलोचना-लेखों का उपयोग किया गया है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल की काव्य-दृष्टी-

आचार्य शुक्ल के काव्य-दृष्टि पर आज से पहले भी विचार किया गया और आज भी विचार किया जाता है । केदारनाथ सिंह 'आचार्य शुक्ल की काव्य दृष्टि और आधुनिक कविता' लेख में शुक्ल जी के काव्य दृष्टि पर विचार करते हैं । उनकी दृष्टि में महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि वे किसी भी रचना से क्या पाते हैं ? वे श्रेष्ठता का निकष इसी प्रश्न को मानते हैं और लिखते हैं—"इससे किसी विचारक या आलोचक के ऐतिहासिक महत्त्व में कोई अंतर नहीं आता कि वह बाद की पीढ़ी के लिए प्रासंगिक ठहरता है या नहीं । इस बात की पड़ताल हमें अनेक महत्त्वपूर्ण निष्कर्षों तक ले जा सकती है कि कोई पूर्ववर्ती विचारक या आलोचक आगे आनेवाले कवि या लेखक को क्या देता है या फिर नहीं देता ।"१ केदारनाथ सिंह प्रासंगिकता से ज्यादा उपादेयता को महत्त्व देते हैं इसी आधार पर वे किसी कवि या आलोचक को परखते हैं । अतः यहाँ पर भी वे इसी तत्त्व को आचार्य शुक्ल में ढूँढ़ने का प्रयास करते हैं । आचार्य शुक्ल के आलोचक व्यक्तित्त्व से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से पूरा आधुनिक

हिंदी साहित्य प्रभावित है । वे बताते हैं कि आधुनिक कविता के संबंध में आचार्य शुक्ल के विचार बहुत कम लागू होते हैं । इस बात को वे इस प्रकार लिखते हैं—"एक रचनाकार के निकट आचार्य शुक्ल की कविता संबंधी विचार-सूत्र सक्रिय रूप में घटित हुआ था— बहुत कुछ आचार्य शुक्ल के व्यक्तित्त्व से समानांतर परंतु आचार्य शुक्ल के बावजूद ।"२ केदारनाथ सिंह आचार्य शुक्ल के आलोचना दृष्टि से प्रभावित थे मगर वहीं तक जहाँ तक उन्हें अच्छा लगा । जहाँ उन्हें उनकी बात अखरती है वहाँ उनकी आलोचना भी करते हैं ।

उनको 'कविता क्या है', 'काव्य में लोकमंगल की साधनावस्था', 'रसात्म-कबोध के विविध रूप' और 'काव्य में प्रकृति दृश्य' आदि निबंध प्रभावित करते हैं । आचार्य शुक्ल के इन निबंधों में ही आचार्य शुक्ल के काव्य चिंतन के सूत्र उन्हें मिलते हैं । फिर भी वे आचार्य शुक्ल की व्यावहारिक आलोचना से ज्यादा प्रभावित थे जो आचार्य शुक्ल ने सूर, तुलसी, जायसी आदि पर किया था । आचार्य शुक्ल एक ऐसे आलोचक हैं जिन्होंने अपने जीवन काल में द्विवेदी युग, छायावाद, और अंतिम समय में प्रयोगवाद की शुरूआत भी देखी थी । इस तरह के साहित्यिक परिवर्तन मध्य उनके काव्य-बोध का विकास हो रहा था । केदारनाथ सिंह के शब्दों में—"उन्होंने अपने समय के विशेष कोण पर खड़े होकर हिंदी की सौंदर्य चेतना के पूरे विकास का वस्तुपरक मूल्यांकन किया और सतह से दूरी या निकटता के अनुपात में शिखरों नया क्रम-निर्धारण किया । यह सब कुछ करने के पीछे इतिहास की एक गहरी समझ तो थी ही, पर उसी के साथ-साथ एक सर्वथा नई सौंदर्य दृष्टि और नया काव्य- बोध भी था, जो उनके काव्य संबंधी पूरे विश्लेषण के पीछे सक्रिय था ।"३

केदारनाथ सिंह 'आधुनिकता' शब्द को लेकर विचार करते हुए बताते हैं कि हिंदी आलोचना में 'आधुनिकता' शब्द का पहला प्रयोग आचार्य शुक्ल ने ही भारतेंदु की कविता पर विचार करते हुए किया था । आचार्य शुक्ल के यहाँ आधुनिकता शब्द एक मूल्यपरक शब्द है । यहाँ आधुनिकता से तात्पर्य था- काव्य को देश की बदलती हुई परिस्थिति और मनोवृत्ति के मेल में लाना । उनकी यह

धारणा अत्यंत भिन्न थी । उनकी इसी धारणा पर विचार करते हैं और इसे उनके काव्य दृष्टि को समझने के लिए आवश्यक भी मानते हैं । आचार्य शुक्ल रीतिकाल का विरोध करते हैं, इस विरोध के पीछे उनके अपने तर्क भी थे और सिद्धांत भी । आधुनिक काल में हिंदी कविता में अनेक परिवर्तन आए । ये परिवर्तन भाव एवं भाषा दोनों स्तरों पर थे । रीतिकाल के बाद में जो क्रांतिकारी परिवर्तन हिंदी कविता में हुआ, उसे आचार्य शुक्ल अपनी सहानुभूति देते हैं । इसी परिवर्तन को बाद में वे परिवर्तनवाद की संज्ञा देते हैं । उनकी यह प्रतिक्रिया थोड़ी मिश्रित है, उसका प्रमाण यह है कि—"हमारे साहित्य में रीतिकाल की जो रूढ़ियाँ हैं वे किसी और देश की नहीं, उनका विकास इसी देश के साहित्य के भीतर संस्कृत में हुआ है ।"४ आचार्य शुक्ल को स्पष्ट था कि रीतिकाल जैसा भी हो वह अपने ही देश के परिस्थितियों की उपज थी । जो अपने समय का प्रतिनिधित्व करती है । किसी कारण से उसकी उपादेयता और सौंदर्यदृष्टि को तो दुर्लक्ष किया जा सकता है मगर उसके ऐतिहासिकता को नहीं । आचार्य शुक्ल का यह काव्य-बोध अत्यंत आधुनिक था जिसका उल्लेख करना केदारनाथ सिंह अनिवार्य समझते हैं । इससे उनकी दृष्टि का भी पता चलता है । जो अपने ऐतिहासिक संदर्भ को महत्त्व देते हैं । आचार्य शुक्ल देसीपन की व्याख्या करते हुए लिखते हैं—"जब-जब शिष्टों का काव्य पंडितों द्वारा बंद कर निश्चेष्ट और संकुचित होगा तब-तब उसे सजीव और चेतन प्रसार देश की सामान्य जनता के बीच स्वच्छंद बहती हुई प्राकृतिक भावधारा से जीवन तत्त्व ग्रहण करने से ही प्राप्त होगा ।"५ इस वाक्य में 'सामान्य जनता' शब्द को वे महत्त्वपूर्ण मानते हैं । आचार्य शुक्ल का इससे ठीक विपरीत वक्तव्य—"अनेक रूपों की धारणा करनेवाला तत्त्व यदि एक है तो शिक्षित जनता की बाह्य और आभ्यंतर स्थिति के साथ सामंजस्य के लिए काव्य अपना रूप भी कुछ बदल सकता है, और रूचि की विभिन्नता का अनुसरण करता हुआ एक साथ कई रूपों में भी चल सकता है ।"६ इस वाक्य में वे 'शिक्षित जनता' शब्द को महत्त्व देते हैं । शुक्लजी के इस विरोधी मत का वे उल्लेख करते हुए, यह शुक्लजी की काव्य समझ या तत्कालीन नवशिक्षित मध्यवर्ग के बढ़ते

हुए दबाव का परिणाम मानते हैं। केदारनाथ सिंह उनके इस अंतर्विरोध को तत्कालीन मध्यवर्ग का अंतर्विरोध मानते हैं, जो किसी न किसी रूप में साहित्य को प्रभावित कर रहा था।

शुक्लजी की काव्यदृष्टि में सामंजस्य एक मूल्यपरक शब्द है। जिसे वे काव्य के एक निकष के रूप में स्वीकार करते हैं। केदारनाथ सिंह यह मानते हैं- यह उनकी कमजोरी है कि उन्होंने एक ही निकष पर अपना सौंदर्यबोध विकसित किया जो आधुनिक कविता के संबंध में प्रभावहीन या अप्रासंगिक साबित होती है। वे आगे यह भी कहते हैं कि शुक्लजी की दृष्टि-निर्माण में जो तत्त्व कारणीभूत थे वे बाद में समयानुसार शिथिल हो गये। इसे केदारनाथ सिंह लिखते हैं—"अतः शुक्लजी की सामंजस्यमूलक परिकल्पना आगे आनेवाले काव्य के संदर्भ में लगभग उसी प्रकार अप्रासंगिक हो गयी, जैसे प्रथम महायुद्ध के बाद विकसित होनेवाली अंग्रेजी कविता के संदर्भ में आई.ए. रिचर्ड्स का संवेगों के संतुलन का सिद्धांत।"७ वे एक ओर तो शुक्लजी की सामंजस्य परिकल्पना को आधुनिक कविता के संदर्भ में अप्रासंगिक बताते हैं, तो दूसरी ओर शुक्लजी की इस दृष्टि को समय सापेक्ष मानते हैं। केदारनाथ सिंह की ही यह दृष्टि है कि शुक्लजी की कमजोरी दिखाते हुए भी उनके महत्त्व को कम आँकना नहीं चाहती।

उनके अनुसार कई बार एक आलोचक जो कहता है, उससे कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण वह होता है, जो वह नहीं कहता। वे यह बात शुक्लजी की काव्य-दृष्टि को समझने के लिए भी कहते हैं, वे इस बात की माँग भी करते हैं कि शुक्लजी जहाँ-जहाँ चुप रह जाते हैं उसकी छान-बीन की जानी चाहिए। छायावाद की कविता पर विचार करते हुए शुक्लजी सबसे अधिक प्रभावित यदि किसी कवि से होते हैं तो वे है पंत जी। केदारनाथ सिंह बताते हैं कि शायद इसका कारण पंत की कविता में प्रकृति का होना है जो कि खुद शुक्लजी के काव्य में भी मौजूद है। इसीलिए पाठक को इसका कारण स्वयं शुक्लजी के अपने काव्य में ढूँढने की सलाह देते हैं। शुक्लजी की इसदृष्टि पर टिप्पणी करते हुए केदारनाथ सिंह लिखते हैं—"उनकी लगभग सारी कविताएँ प्रकृति के किसी न किसी मार्मिक रुप को उद्‌घाटित करनेवाली कविताएँ हैं। मुझे यह बराबर लगता रहा है कि आधुनिक हिंदी कविता के

संबंध में अपना मत स्थिर करते समय शुक्लजी के निकट उनके अपने ही सर्जनात्मक अनुभव के भीतर से विकसित काव्यबोध एक निर्णायक भूमिका निभाता है। यही कारण है कि वे जिन दो कवियों को अपनी सबसे अधिक सहानुभूति देते हैं, वे द्वितीय उत्थान के कवि श्रीधर पाठक और तृतीय उत्थान के कवि सुमित्रानंदन पंत हैं।"८ वे एक आलोचक की आलोचना पर उनके सर्जनात्मक पक्ष का प्रभाव मानते हैं, जिससे कई बार आलोचना पूर्वाग्रहयुक्त होकर, कुछ कवियों का मूल्यांकन ठीक से नहीं कर पाती। अतः केदारनाथ सिंह यहाँ सिर्फ शुक्लजी की आलोचना पर संदेह नहीं करते बल्कि उसी परंपरा के सभी आलोचकों की आलोचना पर भी करते हैं, जो कि इस परंपरा में खुद केदारनाथ सिंह भी आते हैं। यही निष्पक्षता केदारनाथ सिंह के आलोचना-दृष्टि की सबसे बड़ी विशेषता भी है और उनकी शक्ति भी।

शुक्लजी काव्य-भाषा के मर्मज्ञ हैं। उन्होंने काव्य-भाषा पर काफी विचार किया है। यहाँ पर शुक्लजी ने आधुनिक कविता की भाषा पर कम ही सहानुभूति दिखाया है। वे खड़ीबोली पर उतने विस्तार से विचार नहीं करते जितने विस्तार से वे अवधी या ब्रज भाषा पर करते हैं। इसका कारण शुक्लजी की खुद की रुचि हो सकती है। इसके अलावा भी शुक्लजी के भाषा संबंधी विचारों में कई बार अंतर्द्वंद्व भी दिखाई देता है और अंतर्विरोध भी। वे महावीर प्रसाद द्विवेदीजी की भाषा पर टिप्पणी करते हैं कि उनमें वह लाक्षणिकता, वह चित्रमयी भावना और वह वक्रता बहुत कम आ पायी है, जो रस संचार की गति को तीव्र और मन को आकर्षित करती है। शुक्लजी की इसी बात को ध्यान में रखते हुए वे लिखते हैं—"वस्तुतः छायावादी कविता की चित्रभाषा-पद्धति की जटिलता का प्रत्याख्यान करनेवाले आचार्य शुक्ल यहाँ द्विवेदीजी की कविता से उसी चित्रभाषा की अपेक्षा कर रहे हैं जो थोड़ा विचित्र और विडंबनापूर्ण लगता है, यह इस बात का प्रमाण है कि परोक्ष रूप से ही सही, आचार्य शुक्ल की काव्य संबंधी मान्यता के निर्माण में छायावादी काव्य-बोध महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा था।"९ इस प्रकार वे बताते हैं कि शुक्लजी के भाषा संबंधी विचारों में अंतर्विरोध तो था ही उसके साथ ही उनपर छायावादी काव्य-बोध का अप्रत्यक्ष प्रभाव भी है। प्राचीन कविता के संदर्भ में शुक्लजी की

E-ISSN: 3139-1672

काव्य-दृष्टि जितनी स्पष्ट और प्रखर है, उतनी आधुनिक कविता के संदर्भ में नहीं । इसका कारण वे बताते हैं कि उस समय बहुत कुछ बनने की प्रक्रिया में था जैसे खड़ीबोली काव्य-भाषा बन रही थी आदि ।

सारांश

अंततः हम कह सकते हैं कि, आचार्य शुक्ल के काव्य-दृष्टि की पहचान उनकी आधुनिक कविता पर किए हुए विचारों से तो पूरी हो नहीं सकती । मगर शुक्लजी ने जिन चीजों को कम आँका है उससे तो उनकी दृष्टि का पता लगा ही सकते हैं । अतः इन सब पर केदारनाथ सिंह ने जो प्रश्न उठाया, उसके माध्यम से उनकी आलोचना-दृष्टि का परिचय हमें मिलता है । उनकी यह दृष्टि कविता के न्याय की बात करती है । यहाँ पर वे शुक्लजी के अंतर्विरोध एवं द्वंद्व (आंतरिक) के साथ-साथ उनकी शक्ति का भी परिचय देते हैं । अतः केदारनाथ सिंह की जो काव्य-दृष्टि विकसित हुई है उस पर शुक्लजी का प्रभाव था यह निसंदेह हम कह सकते हैं । वे स्वीकार भी करते हैं कि आचार्य शुक्ल के आलोचक व्यक्तित्व की दीर्घ छाया किसी न किसी रूप में लगभग पूरे साहित्य पर पड़ी है । केदारनाथ सिंह की भी मूल चिंता भाषा एवं संवेदना के द्वंद्व को कलात्मक रूप देने की प्रक्रिया की है, जो उन्हें एक दृष्टि देती है ।

संदर्भ

1. अंजलि मिश्रा. (2024). हिंदी आलोचना में आचार्य रामचंद्र शुक्ल की भूमिका और योगदान. *Shodh Sangam Patrika*, *1*(4), 18-24.
2. आचार्य रामचंद्र शुक्ल (१९८६)– हिंदी साहित्य का इतिहास, काशी.
3. केदारनाथ सिंह (२००१), आचार्य शुक्ल की काव्य-दृष्टि और आधुनिक कविता, वाणी प्रकाशन.
4. नामवर सिंह (२००५) – हिंदी आलोचना का विकास, लोकभारती प्रकाशन.
5. Lorenzen, D. N. (2019). *Nirgun Santon Ke Swapana*. Rajkamal Prakashan.
6. Jain, N. (1994). *Kavita Ka Prati Sansar*. Radhakrishna Prakashan.